Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 2, Issue 1- 2017

सतसई परंपरा और रहीम

प्रो. प्रतिभा मुदलियार

शतक तथा सतसई परंपरा

शतक तथा सतसई, मुक्तक काव्य की एक विशिष्ट विधा है। वस्तुतः सात सौ या तीन सौ या सौ फुटकर पदों के संग्रह के रूप में काव्य-रचना की प्रथा इस देश में बहुत पुराने काल से चली आ रही है। गीता में सात सौ श्लोक हैं, चंडीपाठ के श्लोकों की संख्या सात सौ बनाने की कोशिश की गई। तुलसी, वृंद तथा रहीम के नाम के साथ भी सतसई का संबंध स्थापित करने का प्रयत्न किया गया। प्राचीन भारत में लोग अपने फुटकर पदों को संख्यापरक नाम दे दिया करते थे। सौ पदों के संग्रह को शतक कहते थे। इस दृष्टि से अमरुक शतक तो प्रसिद्ध है। भर्तृहरी के भी तीन शतक, मयूर कवि का सूर्यास्तपरक सूर्यशतक और बाण का चंडीशतक प्रसिद्ध हैं।

सतसई रचना की परंपरा "हाल" की गाथासप्तशती से आरंभ हुई। यह प्राकृत का ग्रंथ है तथा इसमें रस से सिक्त और लोकजीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत करनेवाली गाथाएँ हैं। इसके बाद गोवर्धनाचार्य की "आर्यासप्तशती" संस्कृत में लिखी गई। अमरु कवि के "अमरुशतक" में भी शृंगाररस के मनोहारी श्लोक हैं। संख्यापरक इन ग्रंथों के प्रभाव से हिंदी साहित्य में सतसई रचना का चाव बढ़ा। किंतु हिंदी साहित्य में सतसई रचना का विकास अपने निजी ढंग से हुआ; वह अपने पूर्ववर्ती सतसई साहित्य से प्रभावित है परंतु उसका निर्जीव अनुकरण नहीं है।

हिंदी के रीतिकाल के पहले और बाद में भी संस्कृत के शृंगारी शतकों की परंपरा चलती रही है। इस परंपरा में अमल शतक तथा तिलक शतक आते हैं। संख्यापरक नाम देकर संस्कृत में दर्जनों काव्य लिखे गए। ये संख्यापरक नामवाली पुस्तकें धारावाहिक संग्रह नहीं होती थीं। ये परस्पर निरपेक्ष और अपने आप में परिपूर्ण पदों का ही संग्रह होता है।

हिंदी साहित्य में रीतिकाल के प्रमुख कवि बिहारीलाल की लिखी "बिहारी सतसई" ने बड़ी प्रसिद्धी पाई। हिंदी साहित्य में इस ग्रंथ का अत्यंत प्रचार हुआ तथा सतसई रचना के लिए अनेक कवियों को प्रेरित भी किया। "बिहारी सतसई" की बढ़ती हुई लोकप्रियता देखकर अनेक मूर्धन्य कवियों के दोहों को भी बाद में "सतसई" का रूप दे दिया गया, जैसे "तुलसी सतसई"। मुक्तक काव्य का यह रूप इतना जनप्रिय हुआ कि हिंदी में सतसइयों का एक विशाल भंडार हमें उपलब्ध है।

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मैसूर विश्वविद्यालय, मानसगंगोत्री, मैसूर-6.
E-mail Id: mudliar_pratibha@yahoo.co.in

इनमें रहीम सतसई, तुलसी सतसई, बिहारी सतसई, रसनिधि सतसई, मतिराम सतसई, वृंद सतसई, भूपति सतसई, चंदन सतसई, विक्रम सतसई, राम सतसई के नाम प्रमुख हैं और ये सतसइयाँ मध्य युग में लिखी गई। आधुनिक काल में भी सतसइयाँ लिखी गईं जैसे हरिऔध कृत हरिऔध सतसई, वियोगी हरि की वीर सतसई भी बड़ी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

जहाँ तक रहीम की बात है तो रहीम ने दोहावली की रचना की है। जिसमें कुल 300 दोहे संग्रहित हैं। 700 की संख्या से कम हैं। पर रहीम के नाम पर सतसई स्थापित की गई है। संख्या की दृष्टि से देखा जाए ते हम रहीम को शतक परंपरा में देख सकते हैं। कारण इन्होंने 100 से अधिक दोहों की रचना की है। आशय की दृष्टि से अगर हम रहीम के दोहों की चर्चा करेंगे तो हमें इनकी रचनाओं में नीति भक्ति. सुक्ति, लोकव्यवहार तथा ऋंगार संबंधि दोहे मिलते हैं। इनके अलावा भी रहीम का रचनात्मक योगदान बहुत महत्वपूर्ण है।

रहीम का नाम लेते ही बचपन के कुछ दोहे मन में गूंजने लगते है। कई छोटे छोटे दोहे और उनके भीतर छिपा गूढार्थ समझ आने लगता है। शब्दों का प्रयोग ऐसा कि पढ़ अपढ़ ग्रामीण शहरी सभी के लिए समझ पाना सरल, प्रभाव ऐसा कि कठिन को भी सरल बना जाए। एक एक शब्द

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

मानिक माला सा पिरोया। न छेनी न हथोडा, न तुलिका न रंग, मात्र शब्द और भावों की गुंजार करते दोहे. ऐसा काव्य लिखने वाले का नाम हिंदी जगत के लिए अपरिचित कैसे हो सकता है? **रहीम का काव्य**

प्रत्येक लेखक अपने समय, व्यक्तिगत परिस्थितियों, समसामयिक महान साहित्यकारों से प्रभावित होता है। रहीम के काव्य की पार्श्वभूमि में भी उनका टूटता बिखरता परिवार तथा कोलाहल पूर्ण राजनितिक अवस्था का हाथ रहा है। 'दिनन के फेर' को चुपचाप बैठकर देखना, 'नीके दिनों' की चुपचाप प्रतीक्षा करना, 'प्रेम के धागों को चटका कर न तोड़ने की बात', तन को सूप बनाने की सलाह, देने वाले रचयिता के सभी दोहे संघर्ष, दूख एवं विनाश की आग में तपकर बाहर आये व्यक्ति के मन की उपज है। किताबी ज्ञान के साथ उनका अधिकांश ज्ञान जीवन की पाठशाला से प्राप्त किया हुआ था। जन्मजात प्रतिभा को मांजने संवारने के लिए परिस्थिति वश होने वाले घात प्रतिघात की आवश्यकता होती है, जिन्हें कवि ने अपने दोहों में ढाला। उनके शब्द सांचों से बाहर निकले तो लोकोपयोगी, सरस, भारतीय संस्कृति को व्याख्यायित करते जीवन के अंतर्मन का स्पर्श करते दोहे तथा सूक्तियाँ बने।

भक्ति परक दोहे

रहीम के काव्य का मुख्य विषय श्रृंगार, नीति और भक्ति है। इनकी विष्णु और गंगा सम्बन्धी भक्ति-भाव से परिपूर्ण रचनाएँ वैष्णव-भक्ति आन्दोलन से प्रभावित होकर लिखी गयी हैं। नीति और श्रृंगारपरक रचनाएँ दरबारी वातावरण के अनुकूल हैं।

तैं रहीम मन आपनो कीन्हों चारु चकोर

निसि बासर लाग्यो रहैं, कृष्ण चन्द्र की ओर।

इस दोहे में कवि जन जन को उपदेश देता है कि तुम अपने मन को कृष्ण के चरण कमलों में उसी तरह लगाए रहो जैसे चकोर अपना ध्यान चन्द्रमा पर लगाए रहता है। इसीतरह एक और दोहा प्रस्तुत है जिसमें कवि ने ईश्वरी सत्ता का दर्शन कराया है, वे लिखते हैं कि अमर बेलि बिना जड़ की होती है परन्तु ईश्वर उस अमर बेलि को पालता और पोषता है- ऐसे ईश्वर को छोडकर किसकी खोज कर रहे हो.

अमर बेलि बिनु मूल की, प्रति पालत है ताहि।

रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजन फिरिये काहि।

रहीम ने अपनी कविताओं में श्रीकृष्ण की भक्ति को विषय बनाया है। उन्होंने श्रीकृष्ण को पूरा काव्य अर्पित किया। उन्होंने जितनी सहजता के साथ श्रीकृष्ण के विरह के चित्र खींचे हैं उससे उनकी श्रीकृष्ण के प्रति गहरी आस्था की झलक मिलती है। वैष्णव भक्ति के अनुयायी, कृष्ण के प्रेम से ओत प्रोत रहीम केवल कृष्ण का ही नाम नहीं लेते, वे कभी राम कभी, कभी हरी की वंदना करते हैं। श्रीमद्भागवत द्वारा प्रतिपादित नवधा भक्ति के सभी अंगो का वर्णन उनके काव्य में सहज प्राप्त हो जाता है,

'राम मम जान्यो नही, जन्म गंवायो नादी

गहि सरना गति राम की, भाव सागर की नाव

रन बन व्याधि विपत्ति में, रच्छक हरी ही होय.

रहिमन ऐसे प्रभुहि तजि खोजत फिरहि काही,

जैसे अनेक पदों में भक्ति कि जलधार बहती मिल जाती जिसमें पाठक डूब जाता है।

नीति तथा सुक्ति

''प्राचीन भारतीय साहित्य से ही सूक्ति की एक परम्परा चली आ रही है। वह सूक्ति जीवन के निरीक्षण और गहरी अनुभूति से जब उभरती है तो सटीक होती है और तब वह जनजीवन की स्मृति का ही नहीं, बल्कि उसकी मति का भी और उसकी प्रज्ञा का भी अंग बन जाती है। इन सूक्तियों को आदमी केवल याद ही नहीं रखता, उनको जीता भी है और उनसे प्रेरित होकर अपने कर्तव्य का निर्धारण भी करता है। रहीम की सूक्तियों की विशेषता यह है कि उनके सारे दृष्टांत या तो पुराणों से लिए गए हैं या फिर सामान्य जीवन से। दृष्टांतों के चयन में मौलिकता और उनकी निरीक्षण शक्ति का पता चलता है।" इन मुक्तकों में रहीम ने मानव जीवन के सूक्ष्म और चतुर पर्यवेक्षण को विशेष रूप से व्यक्त किया गया है। नीति के कुछ दोहे हम उदाहरण के रूप में देख सकते हैं।

रहिमन कठिन चितान ते, चिंता को चित चेत,

चिता दहति निर्जीव को, चिंता जीव समेत।

रहिमन तब लगि ठहरिए, दान मान सनमान,

घटत मान देखिय जबहिं, तुरतहि करहिं पयान।

आब गई आदर गया, नैनन गया सनेह,

ये तीनों तबही गए, जबहि कहा कछु देह।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

चाह गई चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह,

जिनको कछु नहिं चाहिये, वे साहन के साह।

रहीम का काव्य मुख्यतः सुक्ति का काव्य है। जहाँ भाषा का सीधा और उपरकरणात्मक प्रयोग होता है सर्जनात्मक उतना नहीं। नीति के तो प्रायः सभी दोहों में दूसरी पंक्ति दृष्टांत के तौर पर आती है। दृष्टांत और बिंब में मौलिक अंतर यह है कि दृष्टांत में पहले कही गई बात का स्पष्टिकरण होता है जबकि बिंब में उसका विधान बात से अभेद रहता है। बिंब दृष्टांत की तरह साधन न होकर, साधन और साध्य स्वयं है।

उदा-

जो रहीम मन हाथ है, मनसा कहूँ किन जाहि।

जल में ज्यों छाया परि, काया भींजति नहीं।

दूसरी पंक्ति में जो बात कही गई है वह असल में दृष्टांत है। इसीलिए वह अर्थ का स्पष्टिकरण करता है। जैसे यहाँ कहा गया है कि पानी में परछाई पडने से शरीर भीगता नहीं। यह दृष्टांत है।

ऋंगार

शतक साहित्य कहिए या सतसई उनमे ऋंगारपरक मुक्तक का होना जैसे अनिवार्य है। रहीम भी भिन्न-भिन्न अनुभवों से गुजर कर भी प्रेम की सरसता छोड नहीं पाते। क्योंकि वे जानते हैं कि प्रेम से तो नारायण भी वश में हो जाते हैं और जीवन की सार्थकता इसी में है कि -

रीति, प्रीति सबसौं भली, बैर न हित मित गोत।

रहिमन याहि जनम की, बहुरि न संगत होत।।

सभी से प्रीति और रीतिपूर्ण व्यवहार करना ही उचित है। कम से कम हितैषी, मित्र और समान गोत्र वालों से बैर नहीं करना चाहिये। अब एक यही एक जनम तो मिला है जो कि फिर लौट कर नहीं आने वाला। इसी सिद्धान्त पर चल रहीम अपनी काव्य यात्रा के उस पडाव पर पहुँचते हैं, जहाँ उनका प्रेम अलौकिक हो उठता है। यहाँ त्याग और समर्पण प्रेम की पराकाष्ठा है।

रहिमन प्रीत सराहिये मिले होत रंग दून।

ज्यों हरदी जरदी तजै, तजै सफेदी चून।।

प्रेम में अहं का त्याग ही सर्वश्रेष्ठ है, जैसे हल्दी और चूना मिलते हैं तो हल्दी अपना पीलापन छोड देती है और चूना अपनी सफेदी दोनों मिल कर प्रेम का एक नया चटक लाल रंग बनाते हैं। प्रेम के लौकिक-अलौकिक महत्व के इन प्रसिध्द दोहों ने रहीम को काव्यजगत में अमर कर दिया।

रहिमन धागा प्रेम का मत तोडो छिटकाय।

टूटे तो फिर ना मिले मिले गांठ पड ज़ाए।।

प्रीतम छबि नैनन बसि, पर छबि कहाँ समाय।

भरी सराय रहीम लखि, पथिक आप फिर जाए।।

जब प्रिय की छवि नेत्रों में बसी है तो किसी और छवि की जगह ही कहाँ शेष है? जब सराय ही भरी रहेगी तो आने वाले पथिक देख कर ही लौट जाएंगे। वे तो आखों की पुतली को ही शालिग्राम बना लेना चाहते हैं। जिसे नेह के जल से नित अर्ध्य दे सकें।

रहिमन पुतरी स्याम, मनहुँ जलज मधुकर लसै।

कैंधों शालिग्राम, रूपे के अरधा धरे।।

यही तो एक मुस्लिम कवि के पवित्र प्रेम की पराकाष्ठा थी। रहीम ने श्री कृष्ण के विरह में तडपती गोपियों से लेकर, राम और गंगा मैया को भी अपना काव्य समर्पित किया है। रहीम के मन के ये भक्ति परक प्रेम के संस्कार एक सहज आत्मीयता के कारण ढल सके। बरवै नायिका भेद और नगर शोभा यह लौकिक प्रेम से भरपूर काव्य हैं। भँति-भाँति की स्त्रियों, नायिकाओं की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन इनमें मुख्य है। यह काव्य लौकिक प्रेम का सरस प्रस्तुतिकरण है। एक चित्र-

मितवा चलेउ बिदेसवा, मन अनुरागी।

पिय की सुरत गगरिया, रहि मग लागि।।

प्रिय की स्मृतियों का कलश लिये नायिका रास्ते में खडी है कि जब वे लौटेंगे तो स्मृतियों से भरा कलश उनका मंगल-शकुन बनेगा। प्रेम, सद्भाव व जन-व्यवहार ही उनकी कविता की केन्द्रीय विषयवस्तु है। रहीम की कविताओं का प्रेम न तो रीतिकाल के कवियों की तरह वासना से परिपूर्ण है और न ही भक्तिकाल के कवियों की तरह उसमें पराभौतिक बिम्ब हैं। रहीम की उपलब्ध दोहावली में श्रृंगार के कूल छः सोरठे मिलते हैं जिसमें श्रृंगार के दोनों पक्ष मिलते हैं। द्रष्टव्य हैं,

वियोग श्रृंगार का यह सोरठा देखिए

यक नाहि यक पीर हिय रहीं होती रहै।

काहु न भई सरीर, रीति न वेदन एकसी।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

संयोग श्रृंगार का एक सोरठा देखिए

गई आगि उर लाय, आगि लेन आई जो तिय

लागी नाहिं बुझाय, भभकि- भभकि बरि बरि उठै।

मदनाष्टक भी एक श्रृंगारप्रधान रचना है। जिसमें कृष्ण और गोपियों के प्रेम क व्यापक वर्णन किया गया है।

लोक अनुभव

लोक अनुभव रहीम के काव्य की पूँजी है। रहीम को अपने जीवन में अनेक अनुकूल औऱ विषम परिस्थितियों से गुजरना पडा था जो एक साधारण व्यक्ति कई जन्म लेकर भी प्राप्त नहीं कर सकता था। क्योंकि वे सच्चे भावुक कवि थे इसलिए उन परिस्थितियों के समझने तथा पहचानने की अद्भुत क्षमता थी। शुक्ल जी ने उनके बारे में लिखा है, अपने उदार ह्रदय को संसार वास्तविक व्यवहारों के बीच रखकर जो संवेदना इन्होंने प्राप्त की है, उसी की व्यंजना अपने दोहों में की है। लोक-व्यवहार को उनके दोहे अपने में समेटे हुए हैं। लोक अनुभव के कुछ उदाहरण देखिए-

खीरा का मुँह काटि के, मलियत लोन लगाय।

रहीमन करुए मुखन को, चहियत इहै सजाय़।

कहु रहिम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।

बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत।।

कहु रहीम कैसे निभै, बेर केर को संग।

वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग।।

खैर खून खाँसी खूसी, बैर प्रीति मदपान

रहीमन दाबै ना दबै. जानत सकल जहान।।

रहीम ने अपने अनुभवों को सरल और सहज शैली में मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की। रहीम के दोहों यह खूबी है कि उनमें तेज धार है और ग़जब का पैनापन भी। तभी तो वे एक बारगी दिलो-दिमाग़ को झकझोर देते हैं। उनके नीतिपरक दोहों में जहां अपने-पराए ऊंच-नीच तथा सही-गलत की समझ है, वहीं ज़िन्दगी के चटक रंग भी श्रृंगार के रूप में दिखाई देते हैं। रहीम की ज़िन्दगी पर जहां एक ओर तलवार की चमक का साया रहा, वहीं उन्हें सियासत की शतरंजी चालों का मुकाबला भी क़दम- क़दम पर करना पड़ा। उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में बहुत कुछ ऐसा महसूस किया जिसके बारे में उनके ही माहौल में रहने वाला कभी सोच भी नहीं सकता, फिर आम आदमी की तो बात ही क्या है। क्योंकि ऐसी सोच के लिए जिस दूरदृष्टि और ऊंचे दर्जे की संवेदना की जरूरत हुआ करती है, वह उसमें नहीं होती। रहीम के दोहे इसी मायने में खास है। इनमें उनकी ज़िन्दगी का निचोड़ है।

प्रकृति

मानव, ईश्वर, ज्ञान, प्रेम की चर्चा करने वाले कवि का मन प्रकृति में भी रमता है। प्रकृति का वर्दहस्त प्रत्येक मानव के सर पर होना आवश्यक है। जब जब मानव ने प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया, हस्तक्षेप किया तब तब मिली हैं,- शारीरिक व्याधियां, मानसिक तनाव , व आत्मिक अशांति। कवि मानव को प्रकृति की गोद में पनाह लेने का सुझाव देता है। स्वयं उसका मन प्रकृति की गोद में किलकारियाँ मारता है। यहीं उसे भावों

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

का अक्षय भण्डार मिलता है, जो कविमन को उद्वेलित करता है। यही कवि को अनेक उपदेश मिलते है, जिन्हें वह भाषाबद्ध कर सबके लिए प्रस्तुत कर देता है। यही कवि को प्रतीक मिलते है, सुझाव तथा हल मिलते हैं, सभी कुछ प्रकृति के पास है यदि हम खोजे तो।

द्रष्टव्य है,

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।

अब दादुर वक्ता भए, हमको पुछे कौन।

'तरूवर फल नहीं ख़ात हैं सरवर पियहि न पानी

कही रहीम पर काज हित सम्पति संचाही सुजानी।

कदली, सीप, भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन।

जैसी संगति बैठिये, तसोई फल दीन ।।

प्रसंग चाहे प्रेम का हो, सौन्दर्य का या नायिका भेद का अथवा भक्ति का हो प्रकृति के क्रियाव्यपारों के भीतर तक कवि की दृष्टि जाती है तथा गहन तत्व खोज निकालती है। सूप बन जाती है, भीतरी सत्व निकाल लेती है। मक्खन निकल जाता है, झाग बची रहती है। परिणामतः मिलती हैं ह्रदय ग्राही सूक्तियाँ, जो हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ बन जाती है।

रहीम ने अपने जीवन सागर का मंथन कर अनूभूति द्वारा जो अमृत प्राप्त किया, उसे संसार को दे डाला है। उन दोहों में कहीं उल्लास है, कहीं गूढ व्यथा है, कहीं दर्प हैं कहीं तिरस्कार है, कहीं आक्षेप हैं, कहीं निराशा हैं, कहीं भक्ति है और कहीं उपहास है।

अपने जीवन में रहीम ने बहादुरी से युद्ध किए, कितनी ही उल्लेखनीय विजयें प्राप्त कीं। युद्धों की योजना, रणनीतिक व्यूहरचना में पारंगत थे। लेकिन गौर करने की बात है कि उनकी कविता में न तो युद्धों को महिमामंडित किया गया है और न ही युद्धों का वर्णन है। जीवन में तो युद्धों ने कभी पीछा नहीं छोड़ा, लेकिन युद्ध उनकी कविता से लगभग गायब हैं।

रहीम ने मनुष्य जीवन के वैविध्य को बहुत ही अच्छे से अपने दोहों में समेटा है। अपनी भक्ति, निष्ठा और ऋंगार चेष्टा के बीच उनका कृतित्व भक्ति और रीति के संधि बिंदु पर हैं।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.